दूसरा अध्याय
सन्धि विचार

प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में ही लिखा हुआ उपलब्ध नहीं होता है। जितने भी प्राकृत वैयाकरण हैं, उन्होंने संस्कृत शब्दों में विकार के नियमों का निरूपण कर प्राकृत शब्दों की निष्पत्ति दिखलायी है। अतः यहाँ सन्धि के उन्हीं नियमों का विवेचन किया जायेगा, जिनका प्रयोग प्राकृत साहित्य में पाया जाता है।

सन्धि—जब किसी शब्द में दो वर्ण निकट आने पर मिल जाते हैं, तो उनके मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को सन्धि कहते हैं।

संयोग और सन्धि में इतना भेद है कि जहाँ वर्ण अपने स्वरूप से बिना किसी विकार के मिलते हैं, उसे संयोग और जहाँ विकृत होकर उनके स्थान में कोई आदेश होने से मिलते हैं, उसे सन्धि कहते हैं।

समास और सन्धि में यह अन्तर है कि समास में प्रायः दो या अधिक पद विभक्तियों का त्याग कर मिलते हैं, पर सन्धि में विभक्तियों सहित पदों का संयोग होता है। संक्षेप में वर्णविकार सन्धि है और शब्दविकार समास।

प्राकृत में सन्धि की व्यवस्था विकल्प से होती है, नित्य नहीं। सन्धि के तीन भेद हैं–स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि और अव्यय सन्धि।

स्वर सन्धि—दो अत्यन्त निकट स्वरों के मिलने से जो ध्वनि में विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे–मगह + अहिवई = मगहाहिवई (मगधाधिपतिः)।

व्यञ्जन सन्धि—व्यंजन वर्ण के साथ व्यंजन या स्वर वर्ण के मिलने से जो विकार होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं; जैसे–उसभम् + अजियं = उसभमजियं (ऋषभम् + अजितम्)। प्राकृत में विसर्ग सन्धि का कोई स्थान नहीं है; क्योंकि विसर्ग के स्थान पर ओ या ए हो जाता है।

अव्यय सन्धि—संस्कृत में इस नाम की कोई सन्धि नहीं है, पर प्राकृत में अनेक अव्यय पदों में यह सन्धि पायी जाती है। यह सन्धि दो अव्यय पदों में होती है। यथा–किं + अपि किं पि। इसमें सन्देह नहीं कि प्राकृत में अव्यय और निपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि इस सन्धि को अलग मानना पड़ता है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

स्वर सन्धि

प्राकृत में प्रधानतः चार प्रकार की स्वर सन्धियाँ पायी जाती हैं–दीर्घ, गुण, ह्रस्वदीर्घ और प्रकृतिभाव या सन्धि-निषेध। वृद्धि सन्धि के भी विकृत रूप मिलते हैं।

(१) दीर्घ सन्धि[१]**–**ह्रस्व या दीर्घ अ, इ और उ से उनका स्व–सवर्ण स्वर परे रहे तो दोनों के स्थान में सवर्ण दीर्घ होता है। उदाहरण–

(क) अ + अ = आ–दंड + अहीसो = दंडाहीसो, दंड अहीसो (दंडाधीशः)
अ + आ = आ–विसम + आयवो = विसमायवो, विसम आयवो (विषमातपः)
आ + अ = आ–रमा + अहीणो =रमाहीणो, रमा अहीणो (रमाधीनः)
आ + आ = आ–रमा +आरामो = रमारामो, रमा आरामो (रमारामः)
ण + अल्लिअइ = णाल्लिअइ
ण + आगअ = णागअ (नागतः)
ण + आलवइ = णालवइ (नालयति)
न + अभिजाणइ = नाभिजाणइ (नाभिजानाति)
न + अइदूर = नाइदूर (नातिदूरम्)
ण + अलंकिदा = णालंकिदा (नालंकृता)
धम्मकहा + अवसान = धम्मकहावसान (धर्मकथावसानम्)
महा + आक्खंद = महाक्खंद, महाआक्खंद (महाकुन्दः)
बहु + उदग = बहूदग, बहुउदग (बहूदकम्)
कअ + अवराह = कआवराह (कृतापराधः)
आरक्ख + अधिकते = आरक्खाधिकते (अरक्षाधिकृताम्)
जेण + अहं = जेणाहं (येनाहं)
महाराअ + अधिराओ = महाराआधिराओ (महाराजाधिराजः)
इह + अडवीए = इहाडवीए (इहाटव्याम्)
सहस्स + अतिरेक = सहस्सातिरेक (सहस्रातिरेकः)
इंगिय + आगार = इंगियागार (इंगिताकारः)
किलेस + अणल = किलेसाणल (क्लेशानलः)
दूदिअल + अवमाण = दूदिअलावमाण (द्यूतकरावमानम्)
अह + अवरा = अहावरा (अथापरा)
सास + अणल = सासाणल (श्वासानलः)

१. समानानां तेन दीर्घः १।२।१ हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

इस सन्धि के निषेध–

अइरेग + अट्ठवास = अइरेगअट्ठवास (अतिरेकाष्टवर्षः)

सयल + अत्थमियजियलोअ = सयल अत्थमियजियलोअ
(सकलास्तमितजीवलोकः)

सव्व + अत्थेसु = सव्व अत्थेसु (सर्वार्थेषु)

सेलग जक्ख + आरुहण = सेलग जक्खआरुहण (शैलक यक्षारोहणम्)

ण + आणामि = ण आणामि (न जानामि)

ण + आणासि = ण आणासि (न जानासि)

ण + आणीयदि = ण आणीयदि (न आनयति)

अ + आणंतेण = अ आणंतेण (अजानता)

अ + आणिअ = अ आणिअ (अज्ञात्वा)

विशेष–

प्राकृत में प्रथम पद के अ और अण के स्थान पर ण आदेश होता है। यथा–

अ + अणसहिआलोअ = णसहिआलोअ (असोढालोकः)

अ + अणसहिअ पडिबोह = णसहिअपडिबोह (असोढप्रतिबोधः)

अ + अणपहुप्पंत = णपहुप्पंत, णवहुन्त (अप्रभवत्)

(ख) इ + इ = ई–मुणि + इणो = मुनीणो, मुणिइणो (मुनीनः)

इ + ई = ई–मुणि + ईसरो = मुणीसरो, मुणि ईसरो (मुनीश्वरः)

दहि + ईसरो = दहीसरो, दहि ईसरो (दधीश्वरः)

ई + इ = ई–गामणी + इइहासो = गामणीइहासो, गामणी इइहासो
(ग्रामणीतिहासः)

ई + ई = ई–गामणी + ईसरो = गामणीसरो, गामणी ईसरो (ग्रामणीश्वरः)

पुहवी + ईस = पुहवीस (पृथिवीशः)

(ग) उ + उ = ऊ–भाणु + उवज्झाओ = भाणूवज्झाओ, भाणु उवज्झाओ
(भानूपाध्यायः)

साउ + उअयं = साऊअयं, साउउअयं (स्वादूदकम्)

उ + ऊ = ऊ–साहु + ऊसवो = साहूसवो, साहु ऊसवो (साधूत्सवः)

ऊ + उ = ऊ–बहू + उअरं = बहूअरं, बहू उअरं (वधूदरम्)

ऊ + ऊ = ऊ–कणेरू + ऊसिअं = कणेरूसिअं, कणेरू ऊसिअं
(कणेरूच्छ्रितम्)

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(२) गुण सन्धि[१]—अ या आ वर्ण से परे ह्रस्व या दीर्घ इ और उ वर्ण हो तो पूर्व पर के स्थान में एक गुण आदेश होता है। उदाहरण–

(क) अ + इ = ए–वास + इसी[२] = वासेसी, वास इसी (व्यासर्षिः)
आ + इ = ए–रामा + इअरो = रामेअरो, रामा इअरो (रामेतरः)
अ + ई = ए–वासर + ईसरो = वासरेसरो, वासर ईसरो (वासरेश्वरः)
आ + ई = ए–विलया + ईसो = विलयेसो, विलयाईसी (वनितेशः)

(ख) अ + उ = ओ–गूढ + उअरं = गूढोअरं, गूढ उअरं (गूढोदरम्)
आ + उ = ओ–रमा + उवचिअं = रमोवचिअं, रमाउवचिअं (रमोपचितम्)
अ + ऊ = ओ–सास + ऊसासा = सासोसासा, सासऊसासा (श्वासोच्छ्वासो)
आ + ऊ = ओ–विज्जुला + ऊसुंभिअं = विज्जुलोसुंभिअं, विज्जुलाऊसुंभिअं (विद्युदुल्लसितम्)

गुण सन्धि के अन्य उदाहरण

दिसा + इभ = दिसेभ
संदट्ठ + इभमोत्तिअ = संदट्ठेभमोत्तिअ (संदृष्टेभमौक्तिकः)
पाअड + उरु= पाअडोरु (प्रकटोरुः)
सामा + उअअं = सामोअअं (श्यामोदकम्)
गिरि लुलिअ + उअहि = गिरिलुलिओअहि (गिरिलुलितोदधि)
महा + इसि = महेसि (महर्षिः)
राअ + इसि = राएसि (राजर्षिः)
सव्व + उउय = सव्वोउय (सर्वर्तुकः)
णिच्च + उउग = णिच्चोउग (नित्यर्तुकः)
करिअर + उरु = करिअरोरु (करिभोरू)
अण + उउय = अणोउय (अनृतुकः)

---

१. अवर्णस्येवर्णादिनैदोदरल् १।२।६ हे.।
२. पदयोः सन्धिर्वा ८।१।५–संस्कृतोक्तः सन्धिः सर्वः प्राकृते पदयोर्व्यवस्थितविभाषया भवति।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अपवाद—सन्धि निषेध

पढमसमय + उवसंत = पढमसमयउवसंत (प्रथमसमयोपशान्तः)
आयरिय + उवज्झाय = आयरिय उवज्झाय (आचार्योपाध्यायः)
हेट्ठिम + उवरिय =हेट्ठिमउवरिय (अधस्तोपरि)
कंठसुत + उरत्थ = कंठसुत्तउरत्थ (कंठसूत्रोरस्थः)
अप्प + उदय = अप्पउदय (अल्पोदकम्)
दीवदिसा + उदहीणं = दीवदिसा उदहीणं (द्वीपदिगुदधीनाम्)

सन्धि अभाव—

महा + उदग = महाउदग (महोदकम्)
ईहामिग + उसभ =ईहामिगउसभ (ईहामृगर्षभः)
खग्ग + उसम =खग्गउसभ (खंगर्षभः)
पवयण + उवघोयग =पवयणउवघोयग (प्रवचनोपघातकः)
संजम + उवघाय = संजमउवघाय (संयमोपघातः)
वसंतुस्सव + उवायण = वसंतुस्सवउवायण (वसन्तोत्सवोपायण)

(३) विकृत वृद्धि—सन्धि—

१—ए, ओ से पहले; किन्तु उस ए, ओ से पहले नहीं जो संस्कृत ऐ और औ से निकले हों, अ और आ का लोप हो जाता है अर्थात् मूल ए और ओ से परे अ और आ का लोप होता है। उदाहरण—

गाम + एणी = गामेणी
णव + एला = णवेला
खुड्डग + एगावलि = खुड्डगेगावलि
फुल्ल + एला = फुल्लेला
जाल + ओलि = जालोलि (ज्वालावलिः)
वण + ओलि = वणोलि (वनावलिः)
वाअ + ओलि = वाओलि (वातावलिः)
पहा + ओलि = पहोलि (प्रभावलिः)
उदअ + ओल्ल = उदओल्ल (उदकार्द्रः)
वासेण + ओल्ल = वासेणॉल्ल (वर्षार्द्रः)
माला + ओहड = मालोहड (मालापहृतः)
मट्टिअ + ओलित्त = मट्टिओलित्त (मृत्तिकावलिप्तः)

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जल + ओह = जलोह (जलौघः)
संठाण + ओसप्पिणी = संठाणोसप्पिणी (संस्थानावसर्पिणी)
गुड + ओदन = गुडोदन (गुडौदनम्)
कररुह + ओरंप = कररुहोरंप
वाअंदोलण + ओणविअ = वाअंदोलणोणविअ (वातान्दोलनावनमित)
खंधुक्ख + एव = खंधुक्खेव (स्कन्धोत्क्षेपः)
पातुक्ख + एव = पातुक्खेव (पादोत्क्षेपः)

(४) ह्रस्व दीर्घ विधान सन्धि[१]**—**प्राकृत में सामासिक पदों में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व होता है। इस ह्रस्व या दीर्घ के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। यह ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ स्वर का ह्रस्व विधान कभी बहुल–विकल्प से और कभी नित्य होता है। यथा–

ह्रस्व स्वर का दीर्घ–

अन्त + वेई = अन्तावेई (अन्तर्वेदि)
सत्त + वीसा = सत्तावीसा (सप्तविंशतिः)
पइ + हरं = पईहरं, पइहरं (पतिगृहम्)
वारि + मई = वारीमई, वारिमई (वारिमती)
भुअ + यंतं = भुआयंतं, भुअयंतं (भुजायन्त्रम्)
वेलु + वणं = वेलूवणं, वेलुवणं (वेणुवनम्)

दीर्घ स्वर का ह्रस्व–

जउँणा + यडं = जउँणयडं, जउँणायडं (यमुनातटम्)
नई + सोत्तं = नइसोत्तं, नईसोत्तं (नदीस्रोतः)
मणा + सिला = मणसिला, मणासिला (मनःशिला)
गोरी + हरं = गोरिहरं, गोरीहरं (गौरीगृहम्)
बहू + मुहं = बहुमुहं, बहूमुहं (वधूमुखम्)
सिला + खलिअं = सिलखलिअं, सिलाखलिअं (शिलास्खलितम्)

(५) प्रकृतिभाव सन्धि—सन्धि कार्य के न होने को प्रकृति–भाव कहते हैं। प्राकृत में संस्कृत की अपेक्षा सन्धि निषेध अधिक मात्रा में पाया जाता है। अतः यहाँ इस सन्धि के आवश्यक नियमों का विवेचन किया जायेगा।

---

१. दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ ८।१।४–वृत्तौ समासे स्वराणां दीर्घह्रस्वौ बहुलं भवतः। मिथः परस्परम्। तत्र ह्रस्वस्य दीर्घः।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१) इ और उ का विजातीय स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता।[१] जैसे–पहावलि + अरुणो = पहावलिअरुणो (प्रभावल्यरुणः)

बहु + अवऊढो = बहुअवऊढो (बध्ववगूढः)

न वेरिवग्गे वि + अवयासो = न वेरिवग्गे वि अवयासो (न वैरिवर्गेऽप्यवकाशः)

दणु + इन्दरुहिरलित्तो = दणुइन्दरुहिरलित्तो (दनुजेन्द्ररुधिरलिप्तः)

वि + अ = विअ (इव)

महु + इँ = महुइँ (मधूनि)

वन्दामि + अज्जवइरं = वन्दामि अज्जवइरं

(२) ए और ओ के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो उनमें सन्धि नहीं होती है।[२] यथा–

रुक्खादो + आअओ = रुक्खादो आअओ (वृक्षादागतः)

वणे + अडइ = वणेअडइ (वनेऽटति)

लच्छीए + आणंदो = लच्छीएआणंदो (लक्ष्म्या आनन्दः)

देवीए + एत्थ = देवीएएत्थ (देव्या अत्र)

एओ + एत्थ = एओएत्थ (एकोऽत्र)

वहुआइनहुल्लिहणे + आबन्धतीएँ कञ्चुअं अंगे = बहुआइनहुल्लिहणे आबन्धतीएँ कञ्चुअं अंगे (वध्वा नखोल्लेखने आबध्नत्या कञ्चुकमङ्गे)

तं चेव मलिअ विरुदण्ड विरसमालक्खिमो + एण्हिं = तं चेव मलिअविरुदण्ड विरसमालक्खिमो एण्हिं (तदेव मृदितविरुदण्डविरसमालक्षयामः इदानीम्)

अहो + अच्छरिअं = अहो अच्छरिअं (अहो आश्चर्यम्)

(३) उद्वृत्त स्वर का किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य नहीं होता।[३] यथा–

निसा + अरो = निसा अरो (निशाचरः)–यहाँ चर शब्द के च का लोप होने से अ स्वर उद्वृत्त है।

गन्ध + उडिं = गन्ध उडिं (गन्धकुटीम्)–'कु' में क व्यञ्जन का लोप होने से उ उद्वृत्त है।

निसि + अरो = निसि अरो (निशिचरः)–'च' का लोप होने से अ स्वर उद्वृत्त है।

रयणी + अरो = रयणी अरो (रजनीचरः)

मणु + अत्तं=मणु अत्तं (मनुजत्वं)–'ज' का लोप होने पर अ उद्वृत्त है।

---

१. न युवर्णस्यास्वे ८।१।६. इवर्णस्य उवर्णस्य च अस्वे वर्णे परे सन्धिर्न भवति। हे.।

२. एदोतोः स्वरे ८।१।७ एकार–ओकारयोः परे सन्धिर्न भवति। हे.।

३. स्वरस्योद्वृत्ते ८।१।८. स्वरस्य उद्वृत्ते स्वरे परे संधिर्न भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अपवाद—कहीं-कहीं इस नियम के प्रतिकूल उद्वृत्त स्वर का दूसरे स्वर के साथ विकल्प से सन्धि कार्य होता है और कहीं नियमतः सन्धि होती है। यथा—कुम्भ + आरो = कुम्भारो, कुम्भआरो (कुम्भकारः)—इस उदाहरण—में ककार का लोप होने से अवशिष्ट आ स्वर उद्वृत है। अतः उद्वृत्त स्वर की म्भकारोत्तरवर्ती अकार के साथ विकल्प से सन्धि हुई है।

सु + उरिसो= सूरिसो, सुउरिसो (सुपुरुषः)—'पु' के प व्यञ्जन का लोप होने पर 'उ' उद्वृत्त स्वर है। इसकी 'सु' के साथ विकल्प से सन्धि हुई है।

नित्य सन्धि—चक्क + आओ= चक्काओ (चक्रवाकः)—'वाकः' में से 'वा' का लोप होने से 'आ' उद्वृत्त स्वर है, इसी के साथ नित्य सन्धिकार्य हुआ है।

साल+आहणो=सालाहणो (सातवाहनः)—'व' का लोप होने से 'आ' उद्वृत्त स्वर है और लकारोत्तरवर्ती अकार के साथ उद्वृत्त स्वर की सन्धि हुई है।

(४) 'तिप्' आदि प्रत्ययों के स्वर की अन्य किसी भी स्वर के साथ सन्धि नहीं होती[१]। जैसे—

होइ + इह = होइइह (भवतीह)

(५) किसी स्वरवर्ण के पर में रहने पर उसके पूर्व के स्वर (उद्वृत्त अथवा अनुद्वृत्त) का विकल्प से लोप होता है[२]—सन्धिकार्य नहीं होता। यथा—

तिअस + ईसो = तिअसीसो (त्रिदशेशः)—तिअस (त्रिदश) के सकार के आगे वाले अकार का 'ईसो' (ईशः) के ई के पर में रहने पर लोप हो गया है। अतः स् और ई के मिल जाने से तिअसीसो हुआ है। विकल्पाभाव पक्ष में 'तिअस ईसो' भी होता है। इसी प्रकार—

राअ + उलं=राउलं (राजकुलम्)—यहाँ उद्वृत्त स्वर का लोप हुआ है।

नीसास + ऊसासा = नीसासूसासा (निःश्वासोच्छ्वासौ)
नर + इंद—नरिंद (नरेन्द्रः)
महा + इंद = महिंद (महेन्द्रः)
देव + इंद = देविंद (देवेन्द्रः)
जोइस + इंद = जोइसिंद (ज्योतिषेन्द्रः)
जिण + इंद = जिणिंद (जिनेन्द्रः)
मअ + इंद = मइंद (मृगेन्द्रः)
गअ + ईद = गइंद (गजेन्द्रः)
माअ + इंदजाल = माइंदजाल (मायेन्द्रजालम्)

---

१. त्यादेः ८।१।९. तिबादीनां स्वरस्य स्वरे परे सन्धिर्न भवति। हे.।

२. लुक् ८।१।१०. स्वरस्य स्वरे परे बहुलं लुग् भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

एग + इंदिय = एगिंदिय (एकेन्द्रियः)
सोअ + इंदिय = सोइंदिय (श्रोत्रेन्द्रियम्)
घाण + इंदिय = घाणिंदिय (घ्राणेन्द्रियम्)
जिभ + इंदिय = जिभिंदिय (जिह्वेन्द्रियम्)
फास + इंदिय = फासिंदिय (स्पर्शनेन्द्रियम्)
तद्दिअस + इंदु = तद्दिअसिंदु (तद्दिवसेन्दुः)
राअ + ईसर = राईसर (राजेश्वरः)
कण्ण + उप्पल = कण्णुप्पल (कर्णोत्पलम्)
णील + उप्पल = णीलुप्पल (नीलोत्पलम्)
णह + उप्पल =णहुप्पल (नखोत्पलम्)
रयण + उज्जल= रयणुज्जल (रत्नोज्ज्वलम्)
पव्वद + उम्मूलिदं = पव्वदुम्मूलिदं (पर्वतोन्मूलितम्)
कअ + ऊसासा = कऊसासा (कृतोच्छ्वासः)
गमण + ऊसुअ = गमणूसुअ (गमनोत्सुकः)
एग + ऊण = एगूण (एकोनः)
पंच + ऊण = पंचूण (पञ्चोनः)
भाग + ऊण = भागूण (भागोनः)
महा + ऊसव = महूसव (महोत्सवः)
वसंत + ऊसव = वसंतूसव (वसन्तोत्सवः)
देव + इड्ढि = देविड्ढि (देवर्द्धिः)
उत्तम + इड्ढि = उत्तमिड्ढि (उत्तमर्द्धिः)
महा + इड्ढिय = महिड्ढिय (महर्द्धितः)
विसेस + उवओगो = विसेसुवओगो (विशेषोपयोगः)

व्यंजन सन्धि

प्राकृत में व्यंजन सन्धि का विस्तृत प्रयोग नहीं मिलता है; यतः प्रायः अन्तिम हलन्त व्यञ्जन का लोप हो जाता है। व्यञ्जन का विकारमात्र अनुनासिक वर्णों में ही उपलब्ध होता है। इस सन्धि का प्रमुख नियमों सहित विवेचन किया जाता है।

(१) अ के बाद आये हुए संस्कृत विसर्ग के स्थान में उस पूर्व 'अ' के साथ ओ हो जाता है[१]। यथा–

१. अतो डो विसर्गस्य ८।१।३७ संस्कृतलक्षणोत्पन्नस्यातः परस्य विसर्गस्य स्थाने डी इत्यादेशो भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अग्रतः > अग्गओ
अन्तः + विस्तम्भः > अन्तोवीसंभो
पुरतः > पुरओ
मनः + शिला > मणोसिला।
सर्वतः > सव्वओ।
मार्गतः > मग्गओ।
भवतः > भवओ।
भवन्तः > भवन्तो।
सन्तः > सन्तो।
कुतः > कुदो।

(२) पद के अन्त में रहने वाले मकार का अनुस्वार होता है[१]। जैसे–

गिरिम् > गिरिं
जलम् > जलं
फलम् > फलं
वृक्षम् > वच्छं

(३) मकार से परे स्वर रहने पर विकल्प से अनुस्वार होता है[२]। यथा–

उसभम् + अजिअं = उसभमजिअं, उसभंअजियं (ऋषभमजितम्)
यम् + आहु = यमाहु, यं आहु
धणम् + एव = धणमेव, धणं एव (धनमेव)

(४) बहुलाधिकार रहने से हलन्त अन्त्य व्यञ्जन का भी मकार होकर अनुस्वार हो जाता हैं[३]। यथा–

साक्षात् > सक्खं
यत् > जं
तत् > तं
विष्वक् > वीसुं
पृथक् > पिहं
सम्यक् > सम्मं

---

१. मोनुस्वारः ८।१।२३. अन्त्यमकारस्यानुस्वारो भवति। हे.।
२. वा स्वरे मश्च ८।१।२४. अन्त्यमकारस्य स्वरे परेनुस्वारो वा भवति। हे.।
३. बहुलाधिकाराद् अन्यस्यापि व्यञ्जनस्य मकारः ८।१।२४ सूत्र की वृत्ति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(५) ङ्, ञ् , ण् और न् के स्थान में पश्चात् व्यंजन होने से सर्वत्र अनुस्वार हो जाता है।[१] उदाहरण–

ङ–पङ्क्ति > पंति, पंती; पराङ्मुखः > परंमुहो।

ञ–कञ्चुकः > किंचुओः लाञ्छन्म् > लंछणं।

ण–षण्मुखः > छंमुहो; उत्कण्ठा > उक्कंठा।

न–विन्ध्यः > विंझो, सन्ध्या > संझा।

(६) शौरसेनी प्राकृत में इ और ए के परे रहने से अन्त्य म के स्थान पर विकल्प से 'ण' आदेश होता है। जैसे–

युक्तम् + इदम् = जुत्तं + इणं = जुत्तमिणं, जुत्तंणिणं, जुत्तं इणं।

सदृशम्+ इदम्=सरिसं + इणं=सरिसमिणं, सरिसंणिणं, सरिसं इणं।

किम् + एतत् = किं + एअं = किमेअं–किणेदं, किमेदं।

एवम् + एतत् = एवं + एअं = एवमेअं, एवंणेदं, एवमेदं।

(७) अनुस्वार के पश्चात कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के अक्षर होने से क्रम से अनुस्वार को ङ्, ञ्, ण् , न् और म् विकल्प से होते हैं[२]। यथा–

क – पं + को = पङ्को, पंको (पङ्कः)

ख – सं + खो = सङ्खो, संखो (शंखः)

ग – अं + गणं = अङ्गणं, अंगणं (अङ्गनम्)

घ – लं + घणं = लङ्घणं, लंघणं (लङ्घनम्)

च – कं + चुओ = कञ्चुओ, कंचुओ (कञ्चुकः)

छ – लं + छण् = लञ्छणं, लंछणं (लाञ्छनम्)

ज – अं + जिअं = अञ्जिअं, अंजिअं (अञ्जितम्)

झ – सं + झा = सञ्झा, संझा (संध्या)

ट – कं + टओ = कण्टओ, कंटओ (कण्टकः)

ठ – उ + क्कंठा = उक्कण्ठा, उक्कंठा (उत्कण्ठा)

ड – कं + डं = कण्डं, कंडं (काण्डम्)

ढ – सं + ढो = सण्ढो, संढो (षण्ढः)

त – अं + तर = अन्तरं, अंतरं (अन्तरम्)

थ – पं + थो = पन्थो, पंथो (पन्थाः)

---

१. ङ–ञ–ण–नो व्यञ्जने ८।१।२५. ङ, ञ, ण, न इत्येतेषां स्थाने व्यञ्जने परे अनुस्वारो भवति। हे.।

२. वर्गेन्त्यो वा ८।१।३०. अनुस्वारस्य वर्गे परे प्रत्यासत्तेस्तस्यैव वर्गस्यान्त्यो वा भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

द – चं + दो = चन्दो, चंदो (चन्द्रः)
ध – बं + धवो =बन्धवो, बंधवो (बान्धवः)
प – कं + पइ = कम्पइ, कंपइ (कम्पते)
फ – वं + फइ = वम्फइ, वंफइ (वम्फते)
ब – कलं + बो = कलम्बो, कलंबो (कलम्बः)
भ – आरं + भो = आरम्भो, आरंभो (आरम्भः)

(८) प्राकृत में कितने ही शब्दों के प्रयोगानुसार पहले, दूसरे या तीसरे वर्ण पर अनुस्वार का आगम होता है।[१] यह अनुस्वारागम भी सन्धि कार्य के अन्तर्गत है। उदाहरण–

प्रथम स्वर के ऊपर अनुस्वार–

अंसु (अश्रु) = अंसुं
तंस (त्र्यस्त्रम्) = तंसं
वंक (वक्रम्) = वंकं
मसू (श्मश्रु) = मंसू
पुछं (पुच्छम्) = पुंछं
गुछं (गुच्छम्) = गुंछं
मुडं (मूर्द्धा) = मुंडं
फसो (स्पर्शः) = फंसो
बुधो (बुध्नः) = बुंधो
ककोडो (कर्कोटः) = कंकोडो
दसणं (दर्शनम्) = दंसणं
विछिओ (वृश्चिकः) = विंछिओ
गिठी या गुठी (गृष्टिः) = गिंठि या गुंठी
मज्जारो (मार्जारः) = मंजारो, मज्जारो

द्वितीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम–

इह = इहं
पडसुआ (प्रतिश्रुत्) = पडंसुआ
मणसी (मनस्वी) = मणंसी
मणसिणी (मनस्विनी) = मणंसिणी

१. वक्रादावन्तः ८।१।२६ हे.। वक्र, त्र्यस्र, वयस्य, अश्रु, श्मश्रु, पुच्छ, अतिमुक्तक, गृष्टि, मनस्विनी, स्पर्श, श्रुत, प्रतिश्रुत, निवसन और दर्शन प्रभृति शब्द वक्रादि गण पठित हैं। संस्कृत में यह गण आकृति गण कहलाता है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

मणसिला (मनःशिला) = मणंसिला, मणसिला
वयसो (वयस्यः) = वयंसो
पडिसुदं (प्रतिश्रुतम्) = पडिंसुदं

तृतीय स्वर के ऊपर अनुस्वारागम–

अणिउतयं (अतिमुक्तकम्) = अणिउंतयं, अइमुंतयं, अइमुत्तयं
उवरि (उपरि) = उवरिं
अहिमुको (अभिमुक्तः) = अहिमुंको

(९) जिन शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप होता है उनके अन्त्य स्वर के ऊपर अनुस्वार का आगम होता है। जैसे–पृथक् = पिहं–इस उदाहरण में अन्त्य व्यंजन क् का लोप हुआ है और पृ में संयुक्त ऋकार के स्थान पर इकारादेश हुआ है, तथा 'थ' के स्थान पर 'ह' हो जाने से 'पिह' बना है। पश्चात् उपर्युक्त नियमानुसार अनुस्वार का आगम हो गया है।

(१०) जहाँ स्वरादि पदों की द्विरुक्ति हुई हो, वहाँ दो पदों के बीच में 'म्' विकल्प से आ जाता है। यथा–

एक्क + एक्कं = एक्कमेक्कं, एक्केक्कं (एकैकम्)
एक्क + एक्केण = एक्कमेक्केण, एक्केक्केण (एकैकेन)
अंग + अंगम्मि = अंगमंगम्मि, अंगअंगम्मि (अङ्गे, अङ्गे)

(११) उण एवं स्यादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार का आगम होता है।[१] यथा–

काउण (कृत्वा) = काउणं, काउण
काउआण = काउआणं, काउआण
कालेण (कालेन) = कालेणं, कालेण
वच्छेण (वृक्षेण) = वच्छेणं, वच्छेण
वच्छेसु (वृक्षेसु) = वच्छेसुं, वच्छेसु
तेण = (तेन) तेणं, तेण

(१२) प्राकृत में अनुस्वारागम जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही अनुस्वार लोप भी। अतः व्यंजन सन्धि कार्य के अन्तर्गत अनुस्वार लोप का प्रकरण भी आया है। यहाँ कुछ नियमों का निरूपण किया जायेगा।

(१३) संस्कृत के विंशति, त्रिंशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्दों के अनुस्वार का लोप होता है।[२]

---

१. क्त्वा–स्यादेर्ण–स्वोर्वा ८।१।२७. क्त्वायाः स्यादीनां च यो णसू तयोरनुस्वारोन्तो वा भवति। हे.।

२. विंशत्यादेर्लुक् ८।१।२८. विंशत्यादीनाम् अनुस्वारस्य लुग् भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

विंशतिः = वीसा
त्रिंशत् = तीसा
संस्कृतम् = सक्कअं
संस्कारः = सक्कारो
संस्तुतम् = सत्तुअं

(१४) मांसादिगण के शब्दों में अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है[१]। जैसे–

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का लोप–

मासं, संसं (मांसम्)
मासलं, मंसलं (मांसलम्)
कि, किं (किम्)
कासं, कंसं (कांसम्)
सीहो, सिंघो (सिंहः)
पासू, पंसू (पांसुः–शुः)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का लोप–

कह, कहं (कथम्)
एव, एवं (एवम्)
नूणं, नूर्ण (नूनम्)

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का लोप–

इआणि, इआणिं (इदानीम्)
संमुह, संमुहं (सम्मुखम्)
किंसुअ, किंसुअं (किंशुकम्)

अव्यय सन्धि

अव्यय पदों में सन्धिकार्य करने को अव्यय सन्धि कहा गया है। यद्यपि यह सन्धि भी स्वर सन्धि के अन्तर्गत ही है, तो भी विस्तार से विचार करने के लिए इस सन्धि का पृथक् उल्लेख किया गया है। यहाँ अव्यय सन्धि के नियमों का विवेचन किया जाता है।

(१) पद से परे आये हुए अपि अव्यय के अ का लोप विकल्प से होता है। लोप होने के बाद अपि का प् यदि स्वर से परे हो तो उसका व हो जाता है[२]।

यथा– केण + अपि = केणवि, केणावि (केनापि)
कहं + अपि = कहंपि, कहमवि (कथमपि)

१. मांसादेर्वा ८।१।२९. मांसादीनामनुस्वारस्य लुग् वा भवति। हे.।
२. पदादपेर्वा ८। १/४१. पदात् परस्य अपेरव्ययस्यादेर्लुग् वा भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

किं + अपि = किंपि, किमवि (किमपि)

तं + अपि = तंपि, तमवि (तदपि)

(२) पद से उत्तर में रहने वाले इति अव्यय के आदि इकार का लोप विकल्प से होता है और स्वर के परे रहने वाले तकार को द्वित्व होता है।[१] यथा–

किं + इति = किंति (किमिति)

जं + इति = जंति (यदिति)

दिट्ठं + इति = दिट्ठंति (दृष्टमिति)

न जुत्तं + इति = न जुत्तंति (न युक्तमिति)

स्वर से परे रहने पर तकार की द्वित्व–

तहा + इति = तहात्ति, तहत्ति (तथेति)

पिओ + इति = पिओत्ति, पिउत्ति (प्रियइति)

पुरिसो + इति = पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति (पुरुषइति)

(३) त्यद् आदि सर्वनामों से पर में रहने वाले अव्ययों तथा अव्ययों से पर में रहने वाले त्यदादि के आदि–स्वर का विकल्प से लोप होता है।[२]

एस + इमो = एसमो (एषोऽयम्)

अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ (वयमत्र)

जइ + एत्थ = जइत्थ (यद्यत्र)

जइ + अहं = जइहं (यद्यहं)

जइ + इमा = जइमा (यदीयम्)

अम्हे + एव्व = अम्हेव्व (वयमेव)

अपवाद–पद से पर में इ के न रहने पर इकार का लोप नहीं होता और न तकार को द्वित्व ही होता है। यथा–

'इअ विज्झ–गुहानिलयाए' में इअ–इति के इकार का लोप नहीं हुआ और न तकार को द्वित्व ही हुआ है। इति शब्द जब किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तो तकारवाले इकार को अकार हो जाता है। जैसे –'इति यत् प्रियावसाने' संस्कृत वाक्य के स्थान पर 'इआ जंपि अवसाणे' हो जाता है।

❑ ❑ ❑

---

१. इतेः स्वरात् तश्च द्विः ८।१।४२. पदात् परस्य इतेरादेर्लुग् भवति स्वरात् परश्च तकारो द्विर्भवति। हे.।

२. त्यदाद्यव्ययात् तत्स्वरस्य लुक् ८।१।४०. त्यदादेरव्ययाच्च परस्य तयोरेव त्यदाद्यव्यय योरादेः स्वरस्य बहुलं लुग् भवति। हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY